पाठ-7

मानव संसाधन

जिस वस्तु के द्वारा हम कोई कार्य करते है उसे साधन कहते है। जैसे- पढ़ने, लिखने के लिए हम किताब, कॉपी, पेन आदि का प्रयोग करते हैं तो ये सब पढ़ने के साधन हैं। इन्हें हम शैक्षिक साधन कहते हैं। मानव स्वयं में एक महत्त्वपूर्ण साधन है। मानव को संसाधन क्यों कहा जाता है, आइए जानें-

किसी भी देश का विकास वहाँ पर रहने वाले कर्मठ, योग्य एवं कुशल नागरिकों पर निर्भर करता है। जब किसी देश में पर्याप्त संख्या में व्यावसायिक एवं तकनीक प्रशिक्षित लोग होते हैं तो उस देश का आर्थिक विकास तेजी से होता है। यदि विकास की तुलना में अन्य संसाधनों का उपयोग करने वालों की संख्या अधिक बढ़ती जाती है तो देश समृद्ध नहीं हो सकता एवं अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या किसी भी देश के लिये चिन्ता का विषय होती है। यदि वहाँ के लोग कुशल एवं योग्य हैं तो वे उस देश के लिए उपयोगी संसाधन बन जाते हैं। जनसंख्या की इस स्थिति को 'अनुकूलतम जनंसख्या की स्थिति' कहा जाता है।

अनुकूलतम जनसंख्या, जनसंख्या की वह स्थिति है जो देश मंे उपलब्ध भूमि, सुविधाओं एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव न डालती हो।

अगर किसी देश की जनसंख्या वहाँ पर उपलब्ध संसाधनों से अधिक होगी तो वहाँ के विकास में बाधक होगी।

भारत की जनसंख्या

वर्ष 2011 में भारत की कुल जनसंख्या लगभग 121 करोड़ थी। विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक जनसंख्या भारत की ही है। 1951 से 1981 की अवधि में जनसंख्या की निरन्तर और तीव्र वृद्धि हुई। इसका कारण खाद्यान्न आपूर्ति तथा चिकित्सीय सुविधाओं में सुधार होना रहा। जिससे मृत्युदर में कमी आई। जन्मदर की तुलना में मृत्युदर में कमी होने के कारण ही जनसंख्या में परिवर्तन हुआ। प्रति एक हजार की जनसंख्या पर जन्मे जीवित बच्चों की संख्या को जन्मदर कहते हैं। प्रति एक हजार की जनसंख्या पर मरने वालों की संख्या को मृत्युदर कहते हैं। जन्म दर पर नियन्त्रण के लिए सरकार ने परिवार नियोजन की विभिन्न योजनाएँ लागू की हैं।

भारत की लगभग आधी जनसंख्या उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश राज्यों में निवास करती है। शेष जनसंख्या 23 राज्यों और 7 केन्द्रशासित प्रदेशों में रहती है। भारत की जनसंख्या का लगभग छठा भाग अकेले उत्तर प्रदेश में रहता है। उत्तर प्रदेश की जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय वृद्धि दर से अधिक है।

मानव संसाधनों के संघटन

मानव संसाधन के संघटनों से तात्पर्य है उस देश की जनसंख्या की मूलभूत विशेषताएँ जैसे- आयु, लिंग, साक्षरता, जीवन स्तर आदि।

लिंगानुपात

इसका तात्पर्य कुल जनसंख्या में स्त्री-पुरुष अनुपात से है। इसे प्रति हजार पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या से व्यक्त किया जाता है। मान लीजिए किसी देश का लिंगानुपात 1000 है तो इसका अर्थ हुआ कि उस देश में स्त्री और पुरुषों की कुल संख्या बराबर है। यदि लिंगानुपात 1100 है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस देश में 1000 पुरुषों पर 100 स्त्रियों की संख्या अधिक है। यदि लिंगानुपात 1000 से कम है तो इसका अर्थ यह हुआ कि लिंगानुपात स्त्रियों के प्रतिकूल है अर्थात स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है।

भारत जनगणना 2011 के अनुसार भारत का लिंगानुपात 943 है। मानचित्र संख्या 7.1 को देखकर बताइए कि किस राज्य का लिंगानुपात, राष्ट्रीय लिंगानुपात से अधिक है और किस राज्य का कम है। भारत में सर्वाधिक लिंगानुपात वाले राज्य क्रमशः केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश हैं, जबकि न्यूनतम लिंगानुपात वाले राज्य हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम हैं।

भारत में स्त्रियों के प्रतिकूल लिंगानुपात के कारण-

भारत में बालकों के पालन-पोषण पर अधिक ध्यान दिया जाता है जब कि बालिकाओं की उपेक्षा की जाती है। कभी-कभी गर्भ में ही बालिका की हत्या कर दी जाती है। इसे 'बालिका भूरण हत्या' कहा जाता है।

खुशबू आज एक जानी–मानी डॉक्टर है। उसके माता–पिता को उस पर बेहद गर्व है। लेकिन खुशबू के बचपन की परिस्थितियाँ आज जैसी बिल्कुल नहीं थीं। वह अपने माता–पिता की दूसरी संतान है. उससे पूर्व उनकी पहली संतान भी लड़की ही थी और इस बार खुशबू के माता–पिता एक लड़का चाहते थे। अतः उसके पिता इस दूसरी संतान अर्थात खुशबू की गर्भ में ही भ्रूण हत्या करवाना चाहते थे. लेकिन खुशबू की माँ ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। आज खुशबू के पिता को अपनी गलती का एहसास होता है कि अगर उन्होंने भ्रूण हत्या जैसा अक्षम्य अपराध किया होता तो उन्हें खुशबू जैसी बेटी कभी न मिलती।

सोचिए एवं चर्चा कीजिए-

□क्या इस प्रकार बालिकाओं के प्रति व्यवहार उचित है ?

□यदि स्त्रियों तथा लड़कियों की संख्या कम हो जाय तब हमारे समाज का क्या होगा ?

साक्षरता स्तर

मानव के विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है। इसीलिए हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत ही है। शिक्षा के द्वारा ही लोगों का मानसिक विकास होता है, उन्हें रोजगार मिलता है तथा गरीबी एवं अंधविश्वास को दूर किया जा सकता है। यही कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर आज तक जनसंख्या को शत-प्रतिशत साक्षर करने के प्रयास जारी हैं। स्वतंत्रता के समय भारत की जनसंख्या का केवल छठा भाग ही साक्षर था। वर्ष 2011 में देश की 73 % जनसंख्या साक्षर है जबकि उत्तर प्रदेश की 67.7% जनसंख्या ही साक्षर थी। भारत में स्त्रियों की तुलना में साक्षर पुरुषों की संख्या अधिक है। आज भी बहुत जगहों पर बालिकाओं को विद्यालय भेजने में भेदभाव किया जाता है। इसीलिए सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ चलाई जा रही हैं। सामान्यतः देखा गया है कि बहुत से विद्यालयों में बालिकाओं के लिए अलग से शौचालयों की व्यवस्था न होने के कारण बालिकाओं को विद्यालय नहीं जाने दिया जाता है। इसके लिए सरकार द्वारा विद्यालयों में बालिकाओं के लिए अलग से शौचालयों की व्यवस्था की गई है, ताकि बालिकाओं को विद्यालय भेजने में अभिभावक रोके नहीं।

आयु संरचना-

हमारे घरों में कुछ कम आयु के बच्चे होते हैं, कुछ मध्यम आयु के युवा तथा कुछ अधिक आयु के वृद्ध होते हैं। उसी प्रकार देश में रहने वाले लोगो की आयु में विभिन्नता होती है। किसी देश में विभिन्न पहलुओं के विकास के लिए योजनाएँ बनाने में जनसंख्या का आयु के अनुसार वितरण बहुत सहायक होता है। सरकार को जनसंख्या के युवा वर्ग के लिए स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ चलानी पड़ती हैं। जैसे भारत सरकार द्वारा 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था करना आदि।

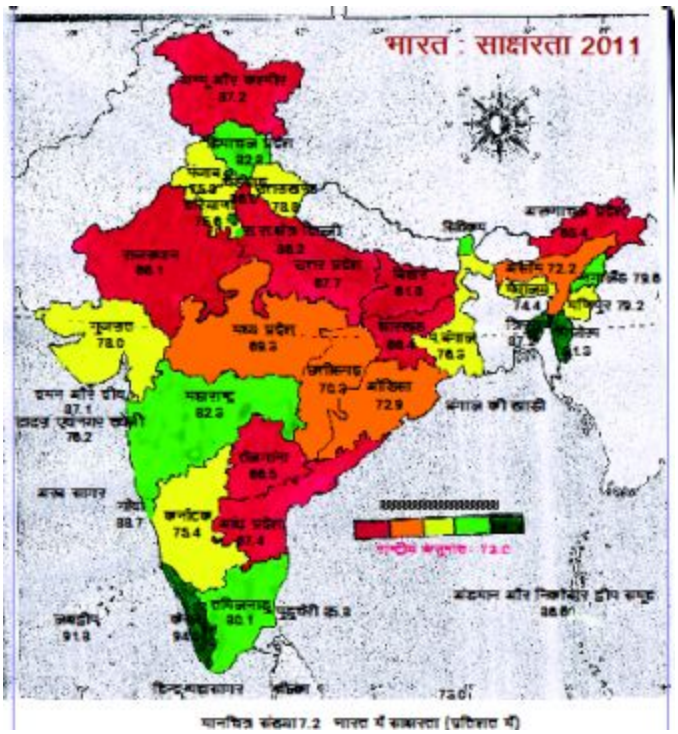

मानचित्र संख्या 7.2 भारत में साक्षरता (प्रतिशत में)

भारत की जनसंख्या

वर्ष 2011 में भारत की कुल जनसंख्या लगभग 121 करोड़ थी। विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक जनसंख्या भारत की है। 1921 से 1951 की अवधि में जनसंख्या की निरन्तर और तीव्र वृद्धि हुई। इसका कारण खाद्यान्न आपूर्ति तथा चिकित्सीय सुविधाओं में सुधार के कारण हुआ जिससे मृत्युदर में कमी हुई। जन्मदर की तुलना में मृत्युदर में परिवर्तन होने के कारण ही जनसंख्या में परिवर्तन होता है। प्रति एक हजार की जनसंख्या पर जन्में जीवित बच्चों की संख्या को जन्मदर कहते हैं। प्रति एक हजार की जनसंख्या पर मरने वालों की संख्या को मृत्युदर कहते हैं। जन्म दर पर नियन्त्रण के लिए सरकार ने परिवार नियोजन की विभिन्न योजनाएँ लागू की हैं।

इन्हें भी जानें-2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या 19.9 करोड़ थी।

भारत की लगभग आधी जनसंख्या का निवास उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश के पाँच राज्यों में है। शेष आधी जनसंख्या 23 राज्यों

और 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में रहती है। भारत की जनसंख्या का लगभग छठा भाग अकेले उत्तर प्रदेश में रहता है। उत्तर प्रदेश की जनसंख्या की वृद्धि राष्ट्रीय वृद्धि दर से अधिक हो रही है।

सोचकर अपनी कॉपी पर लिखिए अगर भारत की जनसंख्या इसी प्रकार बढ़ती गई तो क्या होगा? भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण

□अशिक्षा□परम्परागत विचार

□दूसरे देशों से भारत में लोगांे का आकर बसना (बांग्लादेश, नेपाल, भूटान आदि)।

□मृत्यु दर में कमी□जलवायु

भारत में जनसंख्या वितरण

भारत में जनसंख्या का वितरण बहुत असमान है। यहाँ जनसंख्या कुछ भागों में मधुमक्खी के छत्ते की तरह समूहीकृत (पास-पास) है, जबकि कुछ भागों में अति विरल (दूर-दूर) है। गंगा यमुना के मैदान में अधिक जनसंख्या निवास करती है, क्योंकि वहाँ की भूमि समतल एवं उपजाऊ है। अच्छी जलवायु होने के कारण कृषि भी अच्छी होती है। यातायात की सुविधाएँ एवं बड़े उद्योगों में रोजगार पाने के कारण समुद्र तटीय मैदानों में जनसंख्या अधिक निवास करती है। न्यूनतम जनघनत्व वाले क्षेत्र राजस्थान के मरुस्थल, हिमालय पर्वत, उत्तरीपूर्वी पहाड़ी क्षेत्र एवं मध्य के पठार हैं। किसी एक इकाई क्षेत्र जैसे प्रति वर्ग कि.मी. क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या ही क्षेत्र की जनसंख्या का घनत्व कहलाता है।

सोचिए और अपनी अभ्यास-पुस्तिका पर लिखिए कि महानगरों में जनसंख्या क्यों अधिक है ?

जनसंख्या का स्थानान्तरण

क्या आपने कभी सोचा है कि गाँव तथा नगर में क्या अन्तर है। गाँव के लोगों की मुख्य जीविका कृषि, पशुपालन तथा बागवानी है, जबकि नगर के लोग विभिन्न सेवाओं, उद्योग तथा परिवहन में लगे होते हैं।

भारत गाँवों का देश है। गाँवों के विकास से ही देश की उन्नति होगी। गाँवों में भौतिक सुविधा, बिजली, पानी, शिक्षा, और रोजी-रोटी की परेशानी होती है तो गाँव के लोग नगर की तरफ जाने लगते हैं। गाँवों से नगरों की ओर, नगरों से महानगरों की ओर जनसंख्या का स्थानान्तरण होता है। इससे भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है। इससे भारत मंें नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ रहा है। भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 2001 में 27.8 था, वह 2011 की जनगणना के अनुसार बढ़कर 31.2% हो गया है

भारत जैसे विकासशील देश में औद्योगीकरण होने के कारण आर्थिक विकास हो रहा है। फलस्वरूप नगरीकरण भी बढ़ रहा है। औद्योगीकरण में वृद्धि के कारण ग्रामीण

जनसंख्या का स्थानांतरण नगरों की ओर होने से नगरीकरण में तीव्र वृद्धि हो रही है।

किसी स्थान विशेष को छोड़कर जनसंख्या के अन्यत्र चले जाने को जनसंख्या का स्थानांतरण कहते हैं। हमारे देश के लोग उद्योग-धन्धों को लगाने और रोजगार प्राप्त करने के लिए बाहर के देशों में भी, बड़ी संख्या में गए हैं।

आप पता कीजिए कि आपके कौन-कौन से सगे-सम्बन्धी व आस-पड़ोस के लोग विभिन्न देशों में रोजगार प्राप्त करने के लिए गए हैं ?

जनसंख्या वृद्धि

भारत की जनसंख्या की एक मुख्य विशेषता इसकी तीव्र वृद्धि रही है। भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। यहाँ विश्व के लगभग 2.4% क्षेत्रफल में 16.7% जनसंख्या निवास करती है। भारत में प्रतिवर्ष औसतन 1.64% की दर से जनसंख्या बढ़ रही है।

सोचिए, अगर भारत की जनसंख्या इसी प्रकार बढ़ती गई तो आने वाले समय में क्या होगा ?

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण

- अशिक्षा
- परम्परागत विचार
- मृत्यु दर में कमी
- उष्ण जलवायु
- अन्य देशों से स्थानांतरण

बढ़ती हुई जनसंख्या जीवन की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करती है ?

देश की अर्थव्यवस्था और जनसंख्या के आकार में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जब देश में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती हैं तथा आर्थिक विकास जैसे- कृषि, उद्योग आदि की

दर ऊँची नहीं होती है तब देश आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो जाता है एवं प्रति व्यक्ति आय में कमी हो जाती है, जिससे रहन-सहन का स्तर गिरता है।

अधिक जनसंख्या के कारण कुपोषण ,बेरोजगारी, अशिक्षा, संसाधनों का अधिक शोषण, पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में जनसंख्या का गुणात्मक पक्ष अर्थात जीवन की गुणवत्ता घटती है।

बताइए यदि आपके परिवार की मासिक आय न बढ़े किन्तु परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़ जाय तो क्या होगा ?

□जनसंख्या वृद्धि दर कम करने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, जिला अस्पतालों में परिवार नियोजन हेतु सुविधा एवं प्रोत्साहन देना।

□जनसंख्या से सम्बन्धित सूचनाओं को समाचार पत्रों, रेडियो व दूरदर्शन पर विज्ञापन, प्रचार व प्रसार कराना।

□जनसंख्या वृद्धि दर कम करने के लिए नीतियाँ बनाना एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्रोत्साहित करना।

□जनसंख्या की गुणवत्ता बढ़ाने तथा जीवन स्तर ऊँचा करने के लिए अनेक उपाय करना जैसे शिक्षा का विकास, सार्वजनिक सुविधाओं का विस्तार, पौष्टिक आहार का वितरण,

टीकाकरण, पल्स पोलियो ड्रॉप आदि अन्य कल्याणकारी योजनाएँ चलाना।

एक झलक-

1981 के बाद भारत की जनसंख्या वृद्धि में क्रमिक कमी हुई है। जनसंख्या में कमी की यह प्रवृत्ति जनसंख्या को कम करने के सरकारी प्रयत्नों एवं लोगों के छोटे परिवार के प्रति बढ़ती सोच के कारण हुई है।

अभ्यास

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क)अनुकूलतम जनसंख्या किसे कहते हैं ?

(ख)मानव संसाधन के कौन से मुख्य घटक हैं ?

(ग)भारत में जनसंख्या वृद्धि के कौन से कारण हैं ?

(घ)जनसंख्या के वितरण में अन्तर क्यों पाया जाता हैं ?

(ङ)बढ़ती हुई जनसंख्या से हम किस तरह प्रभावित होते हैं ?

2.सही के सामने (✓) का चिह्न एवं गलत के सामने (✕) का चिह्न लगाइए-

(क)उत्तर प्रदेश की जनसंख्या सबसे कम है। ()

(ख)औद्योगिक नगरों एवं महानगरों में अधिक जनसंख्या रहती है। ()

(ग)भारत मंे जनसंख्या का वितरण समान है। ()

(घ)अधिक जनसंख्या पर्यावरण को प्रभावित करती है। ()

3.रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क)विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक जनसंख्या .....की है।

(ख) जन्मदर एवं..... में परिवर्तन होने के कारण जनसंख्या में परिवर्तन होता है।

(ग) भारत के नगरों में जनसंख्या..... से बढ़ रही है।

(घ)भारत में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों की ..... अधिक है।

प्रोजेक्ट कार्य (Project work)

- अपने विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में पढ़ने वाले छात्र और छात्राओं की संख्या ज्ञात कीजिए।
- कक्षा के अनुसार लिंगानुपात की गणना करके एक चार्ट बनाइए तथा कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए।
- भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणों की सूची बनाइए।